।। ओ३म्।।

वानप्रस्था गुलाबी देवी आर्या दिव्य स्मृति ग्रन्थमाला–
भाग-६

वेद पढ़ें – आगे बढ़ें

लेखक :

डॉ. कमलनारायण वेदाचार्य

वैदिक पर्यावरणविद् , रायपुर छत्तीसगढ़

संयोजक :

वानप्रस्थ सत्यनारायण आर्य

सुजानगढ़, कोलकाता, रायपुर, सिलीगुड़ी

(कुलपति-गुरुकुल हरिपुर, उड़ीसा)

सम्पादक :

आचार्य राहुलदेव शास्त्री व्याकरणाचार्य

(आर्य समाज बड़ाबाजार, कोलकाता)

इस पुस्तिका का विमोचन डॉ. सुदर्शनदेव आचार्य जी (संस्थापक–गुरुकुल हरिपुर, उड़ीसा) के कर-कमलों द्वारा आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय, नर्मदापुरम्, होशंगाबाद के शताब्दी समारोह के शुभ अवसर पर कार्तिक शुक्ल दशमी वि. सं. २०६८ तदनुसार ५ नवम्बर २०११ को गुरुकुल के पवित्र स्थली में सम्पन्न हुआ।

।। ओ३म्।।

सम्पादकीय

वेद ईश्वरीय वाणी है। वेद ज्ञान का मूल स्रोत है। वेद नित्य है। इस सृष्टि में जैसे ईश्वर ने वेदों का ज्ञान दिया है। वैसे ही आगे सृष्टि में भी प्रदान करता रहेगा। वेद पढ़ने का अधिकार मनुष्य मात्र को है, चाहे वह किसी भी मत सम्प्रदाय, पंथ तथा किसी भी देश में रहने वाला हो। अन्य कोई संसार का तथा कथित ग्रन्थ इसका स्थान नहीं ले सकता, क्योंकि ईश्वर की वाणी होने की सम्पूर्ण कसौटियों पर केवल वेद ही खरा उतरता है। वेद का अर्थ ज्ञान है। बिना ज्ञान के मनुष्य का कभी निर्माण नहीं हो सकता है। वेद में मनुष्य जीवन की सभी प्रमुख समस्याओं का समाधान है। वेद संसार रूपी सागर से पार उतरने के लिए नौकारूप है। महर्षि दयानन्द ने लिखा है–**"वेद सब सत्य विद्याओं"** का पुस्तक है। महर्षि मनु के शब्दों में **"वेदोऽखिलोधर्ममूलम्"** सम्पूर्ण वेद धर्म का मूल है। वेद मानव जाति के सर्वस्व हैं। महर्षि अत्रि के अनुसार **"नास्ति वेदातपरं शास्त्रम्"**। वेद सामाजिक व्यवस्था वर्णाश्रम धर्म, राजनैतिक, पारिवारिक जीवन, सत्य, प्रेम, अहिंसा, सदाचार, राष्ट्रधर्म, वैदिक विज्ञान को दर्पण की न्याई दिखाता है। वैशेषिक दर्शनकार लिखते हैं **"तद्वचनादाम्नायस्य प्रामाण्यम्"**। ईश्वर द्वारा उपनिष्ट होने से वेद स्वतः प्रमाण है। वेद मनुष्य की रचना न होने से उनका अपौरुषेयत्व सिद्ध ही है। सांख्य में कहा "न पौरुषेयत्वं तत्कर्त्तुःपुरुषस्याभावात्"। वेदान्त में भी कहा गया है "शास्त्रयोनित्वात्" ईश्वर शास्त्र वेद का कारण है अर्थात् वेद ज्ञान ईश्वर प्रदत्त है।

"वेद पढ़े – आगे बढ़ें" इस लघु पुस्तिका में आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान गवेषक, उत्कृष्ट विचारक, दार्शनिक डा. कमल नारायण जी वेदाचार्य ने "गागर में सागर" भरने का कार्य किया है। आपका जन्म ३० जून १९५० को केसरा पाटन दुर्ग (छ. ग.) में हुआ। आपका लेखन कार्य बहुत ही

प्रशंसनीय रहा है। आप पिछले ३५ वर्षों से यह अनवरत कार्य कर रहे हैं। शोध लेख लिखने एवं निबन्ध आदि प्रकाशन में आपकी विशेष दक्षता है। अनेक संस्थाओं के विभिन्न पदों पर आपका कार्यभार संभालना ही आपकी योग्यता का परिचायक है। आपने अब तक अनेक महत्वपूर्ण रचनाएँ लिखी हैं, जिसमें शोध लेख एवं छोटे ट्रेक्ट भी हैं। "पर्यावरण एवं प्रदूषण: वैदिक वाङ्मय में" ये आपका शोध विषय है, जिस पर आपने पी.एच.डी. की है। इस लघु पुस्तिका को मैंने पढ़ा, जिसमें बहुत ही सरल ढंग से वेदों की श्रेष्ठता और वेद ईश्वरीय वाणी है इसका सुन्दर वर्णन प्रमाण सहित दिया है। **"कथं तरेयं भव सिन्धुमेतं"** वालों के लिए यह निश्चित रूप से नौका का कार्य करेगी। इस महत्वपूर्ण कार्य के लिए आपका साधुवाद। इसके साथ ही अनेक संस्थाओं व गुरुकुलों के संरक्षक, ट्रस्टी, कुलपिता, दानवीर प्रेरक पुरुष **वानप्रस्थ सत्यनारायण आर्य जी** ने वेद प्रचारार्थ गुरुकुल होशंगाबाद की शताब्दी समारोह पर अपनी धर्मपत्नी की पुण्य स्मृति में वानप्रस्था गुलाबी देवी आर्या दिव्य स्मृति ग्रन्थमाला का प्रकाशन कर महनीय कार्य किया है। एतदर्थ इनको भी साधुवाद।

अन्त में इस महायज्ञ में प्रत्यक्ष-परोक्ष रूप से अपना सहयोग, आशीर्वाद एवं परामर्श प्रदान करने वाले सभी महानुभावों का मैं हृदय से धन्यवाद एवं आभार व्यक्त करता हूँ। इसी श्रद्धा और विश्वास के साथ–

नामूलं लिख्यते किञ्चित् नानपेक्षित मुच्यते।

विदुषामनुचरः
आचार्य राहुलदेव शास्त्री
(आर्य समाज बड़ाबाजार, कोलकाता)

वेद पढ़ें – आगे बढ़ें

मातृगर्भ से जन्म लेते ही जीवन की यात्रा प्रारम्भ हो जाती है,जो सतत् आगे ही आगे बढ़ती है । मानव जीवन की उत्पत्ति पर जातकर्म संस्कार करने का धार्मिक विधान है,जिसमें जातक की जीह्वा पर सोने की शलाका में शहद लगाकर **"ओ३म् "** लिखा जाता है तथा उसके कान में **"वेदोऽसि "** अर्थात् तेरा गुप्त नाम वेद है' ऐसा कहा जाता है । ईश्वरीय सत्ता एवं उसके दिव्य ज्ञान का सांस्कारिक बोध कराया जाना यह सिद्ध करता है कि जीवन के हर क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिये वेद को अपनाना पड़ेगा। नि:सन्देह जीवन के अन्त में अर्थी का उठना उसका निकाला जाना अन्तिम यात्रा है,किन्तु जीवन भर अर्थपूर्ण जीना होता है। जीवन का अर्थ ही है यथार्थ में जीना। जो पदार्थ जैसा है उसको वैसा ही जानना मानना और समझना ही यथार्थ कहलाता है। भ्रम -भ्रान्ति तथा शंका - सन्देह में जीवन बिताना उसका दुरुपयोग है। अतएव जीवन की अर्थी उठने से पहले जीवन का अर्थ समझ लेना चाहिये। वह यथार्थ है वेद। वेद वह सत्यज्ञान है,जो पदार्थो का सही-सही बोध कराता है और भ्रान्तियों को मिटाता है अथवा भ्रम उत्पन्न ही नहीं होने देता। यह तो सभी जानते हैं कि जगत् और जीवन ये दोनों अबूझ पहेली हैं किसी ने ठीक ही कहा है -

है जीवन एक पहेली इसकी हर दिशा नवेली।
यह सपनों में सजता है और आये हुए को भजता है ॥

पहेली को सुलझाने के लिये मानव को शुरुआत में यथार्थ ज्ञान चाहिये जो उसे वेद से ही मिल सकता है । जड़ प्रकृति की लीला को भी यथोचित रूप से समझने के लिये ईश्वरीय ज्ञान नितान्त अपेक्षित है,क्योंकि सृष्टि के रहस्यों पर से पर्दा उठाने का दावा करनेवाले वैज्ञानिकों के सिद्धान्त का खोज कुछ काल बाद बदल जाते हैं। परिवर्तनशील सिद्धान्त

सर्वमान्य नहीं हो सकते। सबके प्राणपति जगदीश भी अगोचर अर्थात् अतीन्द्रिय (इन्द्रियों की पहुंच से दूर) है, उस दयामय से मिलने के लिये सुमति अर्थात् यथार्थ बुद्धि चाहिये सामान्य ज्ञान नहीं। हम अपने साधारण ज्ञान को परिपूर्ण समझ लेने की भूल कर बैठते हैं। हमारी आत्मा स्वयं अपने मार्ग दर्शन करने में समर्थ नहीं है। देश,काल और परिस्थिति के प्रभाव से युक्त होकर कार्य करने वाला जीवात्मा स्वयं ही शुभ मार्ग का अनुसरण नहीं कर सकता। सत्प्रेरणा का स्रोत सर्वज्ञ का ज्ञान ही हो सकता है। पशु के समान व्यवहार में प्रवृत्त होने से बचने के लिये भी सत्यज्ञान पर भाव सूचक है।

पशु-पक्षियों की अपेक्षा मनुष्य का स्वाभाविक ज्ञान अत्यन्त अल्प है। मानव बिना सिखाये कुछ नहीं सीख पाता। मनुष्य से भिन्न प्राणी समुदाय को जन्म से बहुत सी सिद्धियां प्राप्त हैं,जिन्हें सीखने में आदमी को सैकड़ों वर्ष लग जाते हैं। पक्षी को उड़ने की सिद्धि गाय,भैंस आदि को तैरने की सिद्धि , रेशम के कीड़े को रेशम बनाने तथा मधु मक्खी को मधु बनाने की सिद्धि ये सिद्धियां इन्हें जन्म से प्राप्त हैं। दूसरी ओर मनन की सन्तान मननशील मनुष्य दूसरों से ज्ञान प्राप्त करके ही कुछ सीख पाता है। यदि ऐसा न होता तो विद्यालयों और महाविद्यालयों के खोलने की कोई आवश्यकता न होती। लोग अपने आप सब प्रकार का ज्ञान प्राप्त कर लेते, पर जब तक माता-पिता, आचार्य वा अन्य शिक्षक सिखाने वाले न हों तब तक बालक-बालिकाओं को ज्ञान की प्राप्ति नहीं होती। यह प्रत्यक्ष सिद्ध है। इसके विषय में समय-समय पर अनेक परीक्षण भी किये गये हैं,जिनमें से असीरिया के सम्राट आसुर वानीपाल, यूनान के राजा सेमेटिकल सम्राट फ्रेडरिक द्वितीय, स्कॉटलैण्ड के जेम्स चतुर्थ और मुगल बादशाह अकबर ने (फारसी पुस्तक-'दविस्ताने मजहिब' के अनुसार ३० बच्चों पर) जो परीक्षण किये वे कुछ अंश तक क्रूरतापूर्ण होते हुए भी महत्वपूर्ण एवं विश्वास जनक है। इन लोगों ने छोटे-बच्चों को जंगलों में रखवा दिया और उनके पालन-पोषण के लिये मूक (गूंगी) दाइयों का प्रबन्ध किया। परिणाम यह हुआ कि वे बच्चे मानवीय भाषा न सीख सके उनका व्यवहार

तथा चाल-चलन पशुओं जैसा ही रहा । नीग्रो तथा अन्य जातियों का इतिहास इस बात का साक्षी है कि जब तक वे सुशिक्षित लोगों के सम्पर्क में नहीं आये एवं उन्हें अच्छे अध्यापकों से शिक्षा प्राप्त करने का अवसर नहीं मिला, तब तक वे स्वयं ज्ञान प्राप्त करने में हजारों वर्ष व्यतीत होने पर भी समर्थ नहीं हो सके। भेड़िये द्वारा पोषित रामु नामक बालक का (जिसे गान्धी अस्पताल लखनऊ में रखा गया था और जो पशुओं की तरह चलता, बोलता, डरता डराता कच्चा मांस खाता था) उदाहरण पाठकों को स्मरण ही होगा जिसके विषय में स्व. कन्हैयालाल मुन्शी का लेख समाचार पत्रों में प्रकाशित हुआ था । इसलिये जैसे पिता पुत्र के लिये कल्याणार्थ उपदेश करता है वैसे ही सबके पितृस्थानीय वा आदिगुरु परमेश्वर ने सब मनुष्यों के कल्याणार्थ अन्तर्यामि रुप से जीवों को धर्माधर्म, पापपुण्य, शारीरिक, मानसिक आत्मिक और सामाजिक उन्नति के साधन मनुष्य जीवन का उद्देश्य परमानन्द शाश्वत सुख एवं शान्ति की प्राप्ति इत्यादि विषयों का वेदों के द्वारा सृष्टि के प्रारम्भ में उपदेश किया यह बात सर्वथा तर्कानुमोदित है। इस बात को बड़े सुन्दर शब्दों में महर्षि पतंजलि ने योगदर्शन में सूत्र (०१.२६) द्वारा व्यक्त किया है -

स एष पूर्वेषामपिगुरुः कालेनानवच्छेदात् ॥

वह यह ईश्वर पूर्व गुरुओं (ऋषियों महर्षियों) का भी गुरु है काल के द्वारा नष्ट न होने से (ईश्वर में इतना ज्ञान है कि उसके बराबर या उससे अधिक ज्ञान किसी में भी नहीं हो सकता ,वह सर्वज्ञ है । इसलिये उस आदिगुरु को प्रणाम करें।

ब्रह्मागुरुर्विष्णुर्गुरुर्महेश्वर एव गुरुः ।
परब्रह्मसाक्षात् गुरुःतस्मै गुरवे ब्रह्मणे नमः ॥

जैसे कोई भी संस्था बनाने ,सरकार का कार्य चलाने अथवा कारखाना इत्यादि चलाने से पूर्व उसके नियमों का बनाया जाना अत्यावश्यक है, इसी प्रकार संसाररूपी इस विशाल संस्था को नियम पूर्वक चलाने के लिये भगवान् ने सबके हितार्थ वेद के रूप में नियमों का

निर्देश कर दिया, जिन पर चलने से ही प्रत्येक नर-नारी का कल्याण हो सकता है अन्यथा नहीं। यह बात सुस्पष्ट है कि यदि किसी देश में चोरी, मद्यपान, व्यभिचारादि के विरुद्ध कानून न बनें हुए हों तो ऐसा करने वालों को दण्ड देना भी वहां न्याययुक्त नहीं कहा जा सकेगा। इसलिये और नहीं तो व्यवहार संहिता नियम ग्रन्थ वा वेद के शब्दों में ऋत और सत्य (Physical And Moral enternal laws) का प्रतिपादन करने ज्ञान का सृष्टि के प्रारम्भ में मंगलमय भगवान् द्वारा मनुष्य मात्र के पथ प्रदर्शक के तौर पर दिया जाना बड़ा युक्ति संगत है।

मनुष्य को अपने जीवन-व्यवहार में तथा जगत् को समझकर उससे काम लेने में कुछ कठिनाई न हो इसलिये उसे नैमित्तिक ज्ञान चाहिये क्योंकि नैमित्तिक ज्ञान को पाने की योग्यता सिर्फ मानव में है, पशु-पक्षियों में नहीं। आदि सृष्टि में मनुष्यों का निर्माण शरीरधारी माता-पिता से सम्भव नहीं होता उस समय परमात्मा के उदर रूपी पृथिवी से द्विजन्मा आदिमानव भौतिक शरीर और विद्यामय आध्यात्म युक्त जन्म को प्राप्त किया करता है। उस उदर में आवरण से युक्त अवयवों से पूर्ण साकार गर्भस्थ शिशु, इन्द्रियों का उपयोग करने में असमर्थ होता है। उस समय अन्तर्यामी परमेश्वर निराकार, निरिन्द्रिय(इन्द्रियों से रहित) एवं सर्वव्यापक होने से ज्ञान की प्रेरणा गर्भस्थ के अन्तस् में करता है। सर्वथा गुप्तमन्त्रणा (मन्त्र अर्थात् वेद) जीवात्मा और परमात्मा के बीच होने से शिशु का गुप्त नाम वेद कहा जाता है। परमात्मा के निमित्त से प्राप्त होने वाले ज्ञान को नैमित्तिक कहते हैं। इसे अपौरुषेय भी कहते हैं। क्योंकि वेद पुरुष (जीवात्मा) की कल्पना से नहीं उपजता। मनुष्य द्वारा निर्माण हमेशा बाहर से गढ़कर होता है, जैसे मकान, टेबल, कुर्सी, गेंद आदि पदार्थ बाहर से विकसित किये जाते हैं किन्तु अपौरुषेय रचना अन्दर से बाहर की ओर विकसित होती है, जैसे आम, अमरुद, वृक्ष, पुष्प, सन्तरा, नारियल आदि अन्दर से बाहर की ओर बढ़ते हैं। अपौरुषेय ज्ञान के लिये वाणी या कान इन्द्रियों की आवश्यकता नहीं, वह ज्ञान अन्दर से प्राप्त होता

है। वेदज्ञान से भरपूर आत्मज्योति वाला मानव ही यथार्थ वक्ता, यथार्थ द्रष्टा व व्यवहार वाला हो सकता है।

वेद के वेदत्व उसके अपौरुषेयत्व का प्रतिपादन करने वाला एक प्राचीन श्लोक आचार्य सायण ने ऋग्वेद भाष्य की भूमिका में उद्धृत किया है :-

प्रत्यक्षेणानुमित्या वा यस्तूपायो न विद्यते ।
एनं विदन्ति वेदेन तस्माद् वेदस्य वेदता ॥

जो उपाय प्रत्यक्ष या अनुमान प्रमाण से नहीं जाने जा सकते उन्हें विद्वान् लोग 'वेद' के द्वारा जानते हैं। 'वेद' वेदन (ज्ञान) कराता है, यही वेद का वेदत्व है।

अन्यत्र कहा गया है :-

''वेद्यन्ते ज्ञाप्यन्ते धर्मादिपुरुषार्थ चतुष्ट्योपाया येन स वेद:''

जिसके द्वारा धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष रूप चारों पुरुषार्थो की सिद्धि के उपाय बताये जाते हैं, जनाये जाते हैं, वह वेद है।

ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के वेदोत्पत्ति विषय में स्वामी दयानन्द सरस्वती ने वेद शब्द का निर्वचन सहित अर्थ विभिन्न धात्वर्थ पूर्वक किया है, जिनसे वेद के अतिशय महत्व का बोध प्राप्त होता है।

१-अदादिगणीय ज्ञानार्थक विद् धातु का निर्वचन है -

'विदन्ति जानन्ति सर्वे मनुष्या:सर्वा:सत्यविद्या:यैस्ते वेदा:''

सब मनुष्य जिनके द्वारा सब सत्यविद्याओं को जानते हैं उन्हें वेद कहते हैं।

२-भ्वादिगणीय सत्तार्थक विद् धातु (विद् सत्तायाम्)का निर्वचन है।

'' विद्यन्ते भवन्ति सर्वा: सत्यविद्या: येषु ते वेदा:''

सब सत्य विद्यायें जिनमें विद्यमान हैं, वे वेद कहाते हैं।

३-तुदादिगणीय लाभार्थक विद्लृ लाभे धातु का निर्वचन

'विदन्ति विन्दन्ते लभन्ते सर्वे मनुष्या:सर्वा: सत्यविद्या: येषु ते वेदा:''

सब मनुष्य सब सत्य विद्याओं को जिसमें पाते हैं, वे वेद हैं।

४- रूधादिगणीय विचारार्थक विद् (विचारणे) धातु का निर्वचन

'विन्दन्ते विचारयन्ति सर्वे मनुष्या: सर्वा:सत्यविद्या:यै सो वेदा:

अर्थात् सब मनुष्य सब सत्य विद्याओं का विचार जिनसे करते हैं, वे वेद हैं।

इन्हीं अर्थों वाले ऋक्, यजु, साम और अथर्व (छन्द)रूप में चार प्रकार से विभिन्न महान् ज्ञानराशि वेद को अन्य अनेक नामों से भी पुकारते हैं। जैसे-सुनने-सुनाने की परम्परा से प्राप्त ज्ञान को श्रुति कहते हैं। गुप्त पदार्थों का ज्ञान जिसमें हो उसे मन्त्र कहते हैं,अविद्या आदि दुःखों का निवारक तथा सुखों से आच्छादक वेद को छन्द भी कहते हैं, ऋषि, देवता, स्वर तथा छन्दों से युक्त वेद को संहिता भी कहते हैं। निरूक्तकार ने 'निगम', वैयाकरणों ने 'आगम','ऋषि', दार्शनिकों ने 'आम्नाय' तथा महाभारतकार ने 'दैवीवाक्' कहा है।

आर्य समाज के संस्थापक एवं वेदभाष्यकार महर्षि दयानन्द सरस्वती ने ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद की संहिताओं को ही 'वेद' कहा है, क्योंकि उनके पूर्ववर्ती ऋषियों या भाष्यकारों ने भी यही कहा है। चारों संहिताओं में प्रयुक्त 'वेद' शब्द का अर्थ सभी भाष्यकार ऋग्वेदादि संहिता चतुष्टयात्मक ज्ञानराशि कहते हैं -

वेदाः सांगाश्चत्वारः - सायणाचार्य

चत्वारि श्रृंगेति वेदा वा एतदुक्ता (निरूक्त१३/७ काठक संहिता २५/१),

तत्रापरा ऋग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदोऽथर्ववेदः .... (मुण्डकउपनिषद्१/१/५)

ऋग्यजुःसामाथर्वाख्या वेदाश्चत्वारः (पद्मपुराण५/१८/५६), शतपथ ब्राह्मण में कहा गया है कि **'अग्नि से ऋग्वेद , वायु से यजुर्वेद, आदित्य से सामवेद तथा अंगिरस से अथर्ववेद उत्पन्न हुआ है।'** (शत. ब्रा.१४/५/४/१०) विषय विभाग अथवा संहिता भेद या ग्रन्थ विभाजन की दृष्टि से वेद चार हैं - ऋग्वेद में ज्ञान का विषय है, यजुर्वेद कर्मकाण्ड से सम्बद्ध है, सामवेद उपासना का वेद है और अथर्ववेद विज्ञान का प्रतिपादक है, किन्तु जब वेदत्रयी (त्रय)कहा जाता है,तो उसका अभिप्राय मन्त्र के तीन प्रकारों से है-

त्रयी वै विद्या ऋचोयजूंषिसामानीति। पद्यबद्ध मन्त्र ऋक्, गीतिबद्ध मन्त्र साम तथा गद्यबद्ध मन्त्र यजु है। षड्गुरु नाम के एक प्राचीन आचार्य ऋक् सर्वानुक्रमणी वृत्ति की भूमिका में लिखते हैं -

विनियोक्तव्यरुपश्च त्रिविध:सम्प्रदर्श्यते ।
ऋग्यनुसामरुपेण मन्त्रो वेदचतुष्टये ॥

चारों वेदों में यज्ञादि से विनियोक्तव्य मन्त्र ऋग्,यजु,साम रुप से तीन प्रकार के हैं। महाभारत शान्तिपर्व २२७-१ में भी यही कहा गया है।

उत्तरोत्तर विकास करने के लिये वेद को ही क्यों पढ़े ? इस सम्बन्ध में गत पृष्ठों में जीवन और वेद एक दूसरे के पूरक अथवा पर्यायस्वरूप हैं,यह दिखाकर वेद के अपौरुषेय एवं नैमित्तिक ज्ञान का प्रतिपादन कर वेद शब्द में छुपे उपयोगी अर्थों का स्पष्टीकरण दिया गया, अब 'वेद ही क्यों'? इस प्रश्न का समाधान परीक्षा शैली में किया जा रहा है। विद्वानों के द्वारा समय-समय पर बनायी गई कसौटियों में कस कर परीक्षण करने से वेद की सत्यता अर्थात् सोने के खरेपन (शुद्धता) की परख की तरह सिद्ध होती है। कसौटी में १० तरह से परखने का उल्लेख मिलता है। वे दस कसौटियां हैं, इन्हीं से धर्म के आदिस्रोत का भी पता मिलता है।

कसौटी १- वह ज्ञान जो सृष्टि के आरम्भ में प्रकाशित हो।

धर्म अथवा ज्ञान के मूलस्रोत का पता लगाते हुए यदि हम आज से बीते हुए कल की ओर चलते हैं, तो पाते हैं कि विगत तीन-चार शताब्दियों के भीतर अनेकों आधुनिक मत-मतान्तरों की उत्पत्ति हुई,जिनमें प्रमुख रुप से राधास्वामी मत, ब्रह्मकुमारी,ब्राह्मसमाज, प्रार्थनासमाज, रामकृष्णपरमहंस, विवेकानन्द मिशन, सनातन धर्मरक्षिणी सभा (कलकत्ता में १८७३), रामसनेही मत (शाहपुरा राजस्थान), गोकुलिये गुसाइयों का मत, स्वामीनारायण मत (गुजरात), साईं बाबा का मत, स्वामी समर्थ रामदास (सत्रहवीं शताब्दी) दादू पन्थ, माध्व सम्प्रदाय, चक्रांकित आदि हुए, किन्हीं के अपने ग्रन्थ बने किन्हीं ने परम्परा का अनुसरण किया। पन्द्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में रामानुज सम्प्रदाय की

परम्परा में रामानन्दी वैरागी सम्प्रदाय चला, उसी काल में चैतन्य महाप्रभु हुए, रामानन्द के शिष्य कबीर का मत (पन्थ)चला। १५ अप्रेल १४६९ ई. को पंजाब के शेखपुरा जिले के तलवैडीराय नामक गांव में जन्में गुरु नानक देव जी ने सिख (धर्म)मत चलाया। सातवीं से नवमी शताब्दी के मध्य में भी कई सम्प्रदाय प्रारम्भ हुए, उनमें मुख्य रूप में कापालिक नाथ, वल्लभ सम्प्रदाय है, वल्लभाचार्य द्वारा चलाये गये वल्लभ सम्प्रदाय का ही दूसरा नाम पुष्टिमार्ग भी लिया जाता है। इसी मध्य युग में ही आचार्य शंकर अद्वैतवेदान्त के प्रतिष्ठाता तथा दशनामी संन्यासी सम्प्रदाय के गुरु माने जाते हैं। आचार्य शंकर के साथ उस समय के हिन्दूधर्म से उद्भूत मुख्यत: ७५ विभिन्न मतवादियों के साथ शास्त्रार्थ हुए ऐसा बताया जाता है। कुमारिल भट्ट के मीमांसक मत का भी शंकराचार्य ने खण्डन किया। निम्बार्काचार्य द्वारा भक्ति सम्प्रदाय का उदय भी इसी काल में माना जाता है। २० अगस्त सन् ५७० अथवा २० अप्रेल ५७१ ई. अरब के प्रसिद्ध तीर्थ मक्का में पिता अब्दुल्ला माँ आमिना के घर जन्में हजरत मुहम्मद साहब से इस्लाम धर्म का प्रवर्तन हुआ तथा धर्मग्रन्थ कुरआन का ज्ञान इसी समय मिला।

लगभग दो हजार साल पहले फिलस्तीन में हिरोद राज था। सम्राट आगस्टस के हुकुम से रोमन जगतवी मर्दुमशुमारी हो रही थी, उसमें शामिल होने के लिये युसुफ नाम का बढ़ई नाजरेत नगर से बेधलहम के लिये रवाना हुए, वहीं पर उसकी पत्नी मरियम (मेरी)के गर्भ से ईसा का जन्म हुआ। ३० वर्ष की आयु में जार्डन नदी के किनारे जंगल में एक महात्मा 'मूहन्ना'(जान) के उपदेश से प्रभावित होकर दीक्षा ली तब ईसाई धर्म प्रारम्भ हुआ। बाईबिल (नयानियम) इनका धर्मग्रन्थ है। इन्हीं के कुछ पहले चीन देश में ताओ (जिआओ)तथा कन्फ्यूश (कांगफ्यूत्सी) धर्म चला। ईसा से कोई ६०० साल पहले पूर्वी इरान और कास्पियन समुद्र के दक्षिण -पश्चिम क्षेत्र में माडिया नाम की एक जाति रहती थी उसी के मगी नामक गोत्र में पुरोहितों के वंश में जरदुस्त (जरथुस्त्र जरदस्तु,

जोरोस्टर, जरदूशी कई नाम) का जन्म हुआ, इन्हीं से पारसी धर्म चला इनका धर्मग्रन्थ 'अवेस्ता 'है, जिसे जन्दावस्था भी कहते हैं। जन्द शब्द छन्द का अपभ्रंश है। अथर्ववेद को छन्द वेद भी कहते हैं। वेद के तत्व पारसी धर्म में लिये गये लगभग उसी समय भारतवर्ष में बौद्ध और जैन धर्मों का प्रादुर्भाव हुआ। ईसा से ५६३ साल पहले जब कपिलवस्तु की महारानी महामायादेवी अपने नैहर देवदह जा रही थी तो लुम्बिनी वन में ही गौतम का जन्म हुआ। नाम रखा गया सिद्धार्थ। जन्म के सात दिन के बाद ही मां का देहान्त हो गया। सिद्धार्थ की मौसी गौतमी ने उनका लालन-पालन किया। राजा शुद्धोदन उनके पिता थे। ३५ साल की आयु में उन्हें बोध प्राप्त हुआ। ईसा से ५९९ वर्ष पूर्व वैशाली गणतन्त्र के क्षत्रिय कुण्ड ग्राम में चैत्रशुक्ल तेरस को वर्धमान का जन्म हुआ, वर्धमान का बचपन राजमहल में बीता। वे ही चौबीसवें तीर्थंकर महावीर कहाये। आज से लगभग साढे तीन-चार हजार पूर्व हजरतमूसा ने यहूदा धर्म चलाया, जो बाद में इजराइल का मूलधर्म हुआ। इनके धर्म ग्रन्थ का नाम पुरानी बाईबील में (ओल्ड टेस्टामेण्ट) है, उसके तीन भाग हैं तोरा, नबी और नविश्ते (कुतूबीम)। इन तीनों के अलावा 'तालमूद' का विशेष स्थान है। इसी के समकालीन भारतभूमि में आचार्य बृहस्पति ने चार्वाक् मत चलाया जिसकी गणना आर्हत(जैन)एवं बौद्ध के साथ तीसरे नास्तिक दार्शनिक के रूप में की गई है। महाभारत युद्ध कलियुग के प्रारम्भ में हुआ, भारतीय पंचागों के अनुसार वर्तमान कल्पब्द ५१२७ है, अतः जयग्रन्थ (महाभारत) की रचना का काल भी वही है। भागवत् या पौराणिक मत का काल वैष्णव, शैव और शाक्त सम्प्रदाय भी इसी के आसपास कहा जाता है। स्मार्त या हिन्दू धर्म उससे कुछ पहले का माना जा सकता है। रामायण काल चौबीसवीं त्रेतायुग बताया गया है, वायु पुराण ७०/४८ के प्रमाणानुसार श्रीराम का काल एक करोड़ इक्यासी लाख उनन्चास हजार एक सौ पच्चीस वर्ष होता है। बृहदारण्यक आदि उपनिषद् तथा शतपथ ब्राह्मण आदि इसी काल की रचना माने गये हैं।

वेदों की उत्पत्ति विषयक प्रशन के उत्तर में महर्षि दयानन्द सरस्वती

ने ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के वेदोत्पत्ति विषय के अन्तर्गत लिखा है कि एक वृन्द (अरब), छियानबे करोड़, आठ लाख, बावन हजार नव सौ छहत्तर (१,९६,०८,५२,९७६) वर्ष वेदों की उत्पत्ति में हो गये हैं। ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका का रचनाकाल संवत् १९३३ है, तब से अब २०६८ वि.संवत् तक १३५ वर्ष हुए हैं, इन्हें जोड़ने पर १,९६,०८,५३,१११ वर्ष हुए वेदों की उत्पत्ति को। यह कालगणना सूर्यसिद्धान्त (ज्योतिषग्रन्थ)एवं मनुस्मृति इत्यादि के अनुसार प्रमाणित है। वैज्ञानिकों के द्वारा, रेडियोएक्टिविटी द्वारा, यूरेनियम और थोरियम तत्वों के परीक्षण प्रयोग से भी पृथ्वी की आयु लगभग २ अरब वर्ष के आसपास मानी गयी है।

इस प्रकार कालक्रमानुसार विवेचन से सिद्ध है कि वेद ही धर्म तथा ज्ञान का आदिस्रोत है। अतएव महर्षि मनु का यह कथन समीचीन है कि

"भूतं भव्यं भविष्यच्च सर्वं वेदात् प्रसिध्यति"(मनु.१२/९४)

अर्थात् भूत,भविष्य और वर्तमान में जितना ज्ञान फैला एवं फैलेगा उसका मूल यही विश्वात्मक ज्ञान 'वेद' है। वेद सूर्य की तरह है जिसके प्रकाश में बौद्धिक नेत्र किसी पदार्थ को देख सकता है। अमृतवाणी वेद,विश्व का विराट् मन, अध्यात्म सूर्य तथा समष्टि ज्ञान का समुद्र है, जिसके एक-एक बिन्दु से मानव मस्तिष्क सोचते विचारते हैं। इसीलिये ऋषियों ने इसे विश्वधर्म का मूल बताते हुए धार्मिक परीक्षा की अत्युत्तम कसौटी निरुपित किया है। मैक्समूलर कृत सैकेरेड बुक्स आफ द ईस्ट भाग ३८ पृष्ठ ३१ में कहा गया है कि मानव समाज के पुस्तकालय की पहली पुस्तक ऋग्वेद है। अन्य ९ कसौटियों का आधार यही प्रथम कसौटी है, इसलिये मत-पन्थों का विवरण कुछ विस्तार से लिख गया है।

कसौटी २ - वह ज्ञान किसी देश की भाषा में न हो।

संसार के प्रमुख धर्मों के धर्मग्रन्थ उस-उस स्थान या मत की भाषा में रचे गये हैं। कुरान अरबी में,बाइबिल हिब्रू में, जन्दावस्था पारसी में, बौद्ध त्रिपिटक पाली में तथा जैनग्रन्थ प्राकृत भाषा में, किन्तु वेद सबसे

विलक्षण भाषा में रचे गये हैं। यही परमेश्वर की न्याय प्रियता है कि ऐसी भाषा में ज्ञान प्रदान किया जिसके सीखने में सब देश वालों को एक जैसा परिश्रम करना पड़े। वैदिक भाषा सब भाषाओं से अलग है। लौकिक संस्कृत का वैदिक भाषा से बहुत साम्य है तथापि कई बातों में परस्पर असमानता भी है। वैदिक भाषा की वर्णमाला सबसे अधिक विस्तृत और वैज्ञानिक है। बाल्टिक भाषा की वर्णमाला में १७ अक्षर हैं, हिब्रू में २०, लेटिन में २०, फ्रेन्च में २५, अंग्रेजी में २६, स्पेनिश में २७, अरबी में २८, फारसी में ३१, रूसी में ३५ अक्षर हैं किन्तु वैदिक भाषा में ६३ अक्षर हैं। चीनी भाषा की वर्णमाला में २४० अक्षर माने जाते हैं परन्तु वे मूलाक्षर न होकर मात्र ध्वनि भेद हैं। ऐसे ध्वनि भेद गिनें तो वैदिक संस्कृत में एक हजार अक्षर हो जायेंगे। वेद क्योंकि सृष्टि के आरम्भ में प्रादुर्भूत हुए और अन्य धर्मग्रन्थ भी इसी आधार पर परम्परा से बने तथा मानव जाति के आद्यपूर्वज वेदभाषाभाषी थे, अत: वैदिक संस्कृत भाषा किसी समय समस्त संसार की भाषा थी। मानवीय शक्तियों के ह्रास हो जाने से एवं अज्ञान, प्रमाद, अनभ्यास आदि कारणों से वैदिक भाषा से अपभ्रष्ट हो-हो कर संसार में विविध भाषायें प्रचलित हो गई, अतएव वैदिक संस्कृत भाषा सब भाषाओं की मूलभाषा है। साभार - डॉ.कुसुमलता आर्यकृत पुरुषसूक्त का विवेचनात्मक अध्ययन, पृ.२८३॥

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश सप्तम समुल्लास में लिखा है - ''जो किसी देश की भाषा में (वेद ज्ञान का) प्रकाश करता तो ईश्वर पक्षपाती हो जाता इसलिये संस्कृत में ही प्रकाश किया। जो किसी देश की भाषा नहीं और वेदभाषा अन्य सब भाषाओं का कारण भी है। सुप्रसिद्ध भाषा शास्त्र विशारद पाश्चात्य विद्वान् बैरन् कुवीर (Baron Cuvier) ने प्रकृति-विज्ञान विषयक अपने व्याख्यानों में कहा है - सर्वज्ञात भाषाओं में से संस्कृत सबसे अधिक नियमबद्ध है और यह बात विशेषतया उल्लेखनीय है कि ग्रीक, लेटिन, जर्मन, स्क्लैवौनिक इत्यादि यूरोप की विविध भाषाओं की धातुएं संस्कृत में पाई जाती हैं अर्थात् उनका मूल संस्कृत है।

कसौटी ३ - वह ज्ञान सम्प्रदाय निरपेक्ष सार्वभौम हो।

डॉ. भवानीलाल भारतीय कृत वैदिक स्वाध्याय के तीसरे निबन्ध में उल्लिखित है कि 'विश्वसाहित्य में वेदों को संसार के प्राचीनतम ग्रन्थ स्वीकार किया गया है, उनकी रचना अथवा आविर्भाव मानव सृष्टि के आरम्भ में उस समय हुआ। जब किसी वर्ग, वर्ण, सम्प्रदाय, जाति या राष्ट्र के आधार पर मनुष्य समाज का विभाजन हुआ ही नहीं था, अतः उनमें निर्दिष्ट उपदेशों तथा शिक्षाओं के एकांगी, साम्प्रदायिक अथवा वर्ग विशेष के हित को पोषक होने का प्रश्न ही नहीं है। वेदों में वर्णित और विवेचित सभी प्रसंग सार्वभौम, सार्वजनीन तथा सार्वकालिक हैं। उनमें जो नैतिक, आध्यात्मिक एवं मनुष्य की सार्वत्रिक उन्नति के लिये अभीष्ट जो कुछ भी कहा गया है, वह मानव के व्यापक हित का प्रयोजक है। वेदों में सत्य को परमधर्म तथा परमव्रत कहा गया है। सत्याचरण की कोई सीमा निर्धारित नहीं है। वाणी-मन और कर्म से यथार्थ का अनुसरण एवं आचरण ही सत्याचरण है। इसी अभिप्राय को

अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तच्छकेयं तन्मे राध्यताम्।
इदमहमनृतात्सत्यमुपैमि ॥

यजुर्वेद ०१/०५॥

में अभिव्यक्त किया गया है। मनुष्य का सबसे बड़ा व्रत यही है कि वह अनृत को त्यागकर सत्य को धारण करें।

वस्तुतः वैदिक संस्कृति ही विश्व संस्कृति है, उसमें ही मानव का सर्वांगीण हित निहित है। इस मानवीय संस्कृति को यजुर्वेद ०७/१४ ने प्रथमा तथा विश्ववारा संस्कृति कहा है। वेदों का उद्‌बोधन और सम्बोधन भी समग्र मानवता के लिये है, उसकी दृष्टि में सभी मनुष्य परमात्मा के दिव्य अमृतपुत्र हैं। **शृण्वन्तु विश्वे अमृतस्य पुत्रा आ ये धामानि दिव्यानि तस्थुः** यजुर्वेद ११/०५ आदि मन्त्रों में इसी भाव को व्यक्त किया गया है। वेदों में प्रतिपादित आध्यात्मिक और दार्शनिक भाव भी परवर्ती साम्प्रदायिक आस्थाओं, उपासना एवं पूजा पद्धतियों के सर्वथा विपरीत विश्वजनीन अनुभूतियों से युक्त है। वेद की शिक्षायें सम्प्रदाय भेद से रहित

समग्र मानव जाति के हित की कामना से सृष्ट है, इसका इससे बढ़कर और प्रमाण क्या हो सकता है कि स्वयं वेद की कल्याणी वाणी के उद्घोषक परमात्मा ने ही **'यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः'** की घोषणा पूर्वक वेदों में वर्णित विचारधारा को ब्रह्म और राजन्य, शूद्र और वैश्य, आरण्यक एवं ग्राम्य सभी के हित की विधायक कहा है। वेदों को किसी सम्प्रदाय विशेष की सीमा में परिसीमित कर देना इस महनीय साहित्य के प्रति अन्याय ही होगा।

कसौटी ४- जिसमें परस्पर विरोधी बातें न हों।

चारों वेदों में कही विरोधाभास नही है और न ही पूर्वापर प्रसंग में। वेदों में शब्द पुनरुक्ति तथा अर्थ पुनरुक्ति पर्याप्त होते हुए भी पुनरुक्ति दोष कहीं नहीं है। ऐसा ही यास्क आदि प्राचीन वेदज्ञों एवं सायण आदि भाष्यकारों ने भी स्वीकार किया है। कई स्थलों पर मन्त्रसाम्य होते हुए भी प्रकरणानुसार अर्थ भिन्न हो जाता है। अर्थभेद में काव्यशास्त्रियों ने भी पुनरुक्ति दोष नहीं माना है। आर्य ज्योति में डॉ. रामनाथ वेदालंकार ने वेदों में पुनरुक्ति पर विचार व्यक्त करते हुए आगे लिखा है कि पुनरुक्ति का प्रयोजन दाढर्य (बल देना)होता है तथा अलंकार भी होता है।

वेदों से भिन्न ग्रन्थों में प्रायः परस्पर विरोधी बातें मिलती हैं अथवा पहले कहे विषय का खण्डन भी मिलता है। जैसे कहीं पर **ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशे अर्जुन तिष्ठति** भगवान् सभी हृदयों में विराजमान रहते हैं,कहा गया है वहीं आगे चल कर **'मामेकं शरणं व्रज अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मुंचामि'** मेरी शरण में आ मैं तुझे सब पापों से मुक्त कर देता हूँ, यह कहा गया है जो सैद्धान्तिक रुप से परस्पर विरोधी बातें हैं। इसी तरह **'भये प्रगट कृपाला दीनदयाला........'** गाया जाता है उसी ग्रन्थ में **'बिनु पग चले सुने बिन काना........'** आदि भी विरोधी भावना व्यक्त हैं

कसौटी -५ - वह ज्ञान सृष्टि नियमों के विरुद्ध न हो।

वेदों में सृष्टि के शाश्वत नियमों का सुन्दर विवेचन किया गया है। वेद के सिद्धान्त सृष्टि नियमों के सर्वथा अनुकूल है। ऋग्वेद १०/१९० के तीन मन्त्रों में सृष्टि रचना का तर्कपूर्ण बुद्धि परक तथा वैज्ञानिक वर्णन किया गया है। जिसका भाव है कि सर्वशक्तिमान् परमात्मा ने अद्वितीय सामर्थ्य (अभीद्ध और तपस् गुणों) से प्रथम ऋत (अटल नियम-लॉ ऑफ नेचर)एवं अस्तित्व को पैदा किया। इसके पश्चात् अन्धकार और प्रकाश का उद्भव हुआ। उससे काल (सम्वत्सर) तथा दिन रात यथापूर्व पैदा किये और अन्त में लोकलोकान्तर उत्पन्न किये। अन्य मत मतान्तरों में सृष्टि उत्पत्ति भिन्न-भिन्न प्रकार से बताई गई है जो कानून और कुदरत के खिलाफ हैं। सृष्टि नियमों का निरूपण ऋग्वेद के नासदीय सूक्त हिरण्यगर्भसूक्त एवं पुरुष सूक्त में विचार पूर्वक उपलब्ध है।

कसौटी -६- वह ज्ञान मनुष्यमात्र को उन्नति देनेवाला हो।

वेदों में अध्यात्म विद्यायें तो अपने मूल रूप में मिलती हैं,मनुष्य के इहलौकिक और भौतिक विकास के अनेक उपयोगी सूत्र भी उपलब्ध होते हैं। मानव की वैयक्तिक पारिवारिक और सामाजिक उन्नति के नानाविध उपदेश वेदों में यत्र-तत्र सर्वत्र दृष्टिगोचर होते हैं। राष्ट्रीय भावनायें भी वेदों में उपलब्ध हैं। अथर्ववेद के बारहवें काण्ड का प्रथम सूक्त ही वेद का राष्ट्रीय गीत है, जिसमें मातृभूमि की अर्चना का माहात्म्य वर्णित है।

साभार - वैदिक स्वाध्याय, डॉ. भवानीलाल भारतीय, पृ.०९।

वेद में किसी जाति विशेष को सम्बोधित नहीं किया गया है, सामान्य मनुष्य मात्र वहां उल्लिखित है उसके दो भेद किये गये हैं आर्य एवं दस्यु (**विजानीह्यार्यान् ये च दस्यवः**ऋग्वेद ०१/५१/०८)। ये दोनों गुणवाचक नाम हैं। आर्य-श्रेष्ठ, सदाचारी। दस्यु-नियमभंगकर्ता, घातक, नाशक। वेदों में समस्त मानव समाज को मन, वचन, कर्म से संगठित होकर रहने का

उपदेश ऋग्वेद १०/१९१ संगठन सूक्त में दिया गया है। साथ ही मानव मात्र को सहृदयता और द्वेषरहितता का पाठ पढ़ाकर एक-दूसरे से उसी प्रकार आत्मीय व्यवहार (अभिहार)करने का पवित्र उपदेश है, जैसे गाय अपने तुरन्त उत्पन्न बछड़े से करती है।

सहृदयं सांमनस्यमविद्वेषं कृणोमि वः।
अन्यो अन्यमभिहर्यत वत्सं जातमिवाघ्न्या ॥ अथर्ववेद ३/३०/१॥

वेद में प्राणीमात्र को मित्र की दृष्टि से देखने का अनुपम सन्देश है।

.......**मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे** (यजुर्वेद ३६/१८)

सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु (अथर्ववेद)

वेद से अन्य ग्रन्थों में छद्‌म रूप से अपने ही अनुयायियों के उत्थान पर जोर दिया जाता है। सम्प्रदायों का प्रवर्तन हुआ ही इसीलिये है कि गुरु-चेले मिलकर मौज उड़ायें, भाग्यवाद और अकर्मण्यता में जकड़े होते हैं।

कसौटी - ७- वह ज्ञान सब सत्यविद्याओं का केन्द्र है।

वेद यथार्थ ज्ञान से युक्त है, उसमें असत्य विद्यायें अथवा गप्प या जादू टोना की विद्यायें नहीं हैं, इसीलिये राजर्षि मनु ने वेद को 'सर्वज्ञानमय' कहा है। आद्य शंकराचार्य वेद को सर्वज्ञ का यथार्थ ज्ञान मानते हैं।महर्षि दयानन्द सरस्वती वेद को सब सत्य विद्याओं का पुस्तक मानते हैं। ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में उन्होंने वेदों में विज्ञान कर्म उपासना तथा ज्ञान होना सिद्ध किया है। वे विज्ञान को सर्वप्रमुख मानते हैं। **'तत्रादिमो विज्ञानविषयो हि सर्वेभ्यो मुख्योऽस्ति'** महर्षि दयानन्द 'विज्ञान' का अत्यन्त व्यापक अर्थ करते हैं। उनके अनुसार विज्ञान के अन्तर्गत वे सभी विद्यायें समाविष्ट होती हैं, जिनसे परमेश्वर से लेकर तृण पर्यन्त पदार्थों का ज्ञान होता है। इसी रचना में उन्होंने सृष्टिविद्या, पृथिव्यादिलोकभ्रमण विज्ञान, आकर्षणानुकर्षण विज्ञान,

प्रकाश्यप्रकाशकविषय, गणित विद्या, नौविमानादिविद्या, तारविद्या, वैद्यकविद्या तथा राजप्रजाधर्म विद्या आदि का सप्रमाण निदर्शन किया है। पं. धर्मदेव विद्यामार्तण्ड कृत 'वेदों का यथार्थ स्वरूप' में वेदों में विविध विद्याओं का मूलनिर्देश के अन्तर्गत विमान विद्या, समुद्रीजहाज का वेद में स्पष्ट निर्देश, पनडुब्बियों का वर्णन, समुद्र की लहरों पर कार चलाना, ज्योतिष शास्त्र का मूल, आयुर्वेद का मूल, भूगर्भ विद्या, जीव-विज्ञान, भौतिक व रसायन शास्त्र आदि का मूल वेद मन्त्रों सहित उल्लिखित है। आध्यात्म की सत्यता पर पूर्ण प्रकाश प्राप्त होता है। वैयक्ति तथा सामाजिक उन्नति की वैदिक विद्यायें प्रचुरमात्रा में है। वेदों में मनुष्य की आर्थिक उन्नति के उपायों की भी सम्यक् विवेचना की गई है। पं. बाबूलाल जोशी कृत काव्यानुवाद से युक्त लघुरचना (ट्रेक्ट) वेदों में विज्ञान संकेत में पूर्वोक्त विषयों के साथ-साथ स्वतः चलित वाहन,सूर्य से ऊर्जा की प्राप्ति, आकाशीय विद्युत्, ज्यामिति का महत्व, पदार्थ की तीन दशायें, तत्व संख्या, आटोमोबाईल, इंजीनियरिंग, पृथ्वी की गति, सापेक्षता, पृथ्वी का भ्रमण, सूर्य और पृथिवी में आकर्षण,घर्षण विद्युत्, गृह निर्माण, आवास अभिकल्पन, शिलातैल (पेट्रोल), हाइड्रोइलेक्ट्रिसिटी, कास्मिक साईन्स, तीन सौ वर्ष का जीवन, प्रकाश में सात रंग, टारपीडो, सेटेलाईट, अन्तरिक्ष में आवास संकेत,बुनाई प्रौद्योगिकीय आदि विषयों सहित सविवरण वेद मन्त्रों को उद्धृत किया गया है। मेरे (लेखक)शोध प्रबन्ध ''वैदिकवाङ्मय में पर्यावरण एवं प्रदूषण'' में पारिस्थिति की से सम्बन्धित पर्यावरणीय अवधारणायें तथा प्रदूषण निवारण की विधियां वैदिक साहित्य से दी गई है। यज्ञ विज्ञान पर प्रकाश डालने वाले यज्ञोपैथी (हवन से रोग निवारण)एवं पर्जन्य वृष्टि यज्ञ वैज्ञानिक प्रयोग नामक मेरी पुस्तकों में वेदमन्त्रों में विद्यमान विज्ञान को स्पष्ट किया गया है। यज्ञ से जल वर्षा का अनूठा विषय वेदों में ही है।

अमेरिका विदुषी श्रीमती व्हीलर विलेक्स ने वेदों में निरूपित विद्याओं का विचार करने के पश्चात् अपने निष्कर्षों को इस प्रकार प्रस्तुत किया

''वेदों में न केवल जीवन के लिये आवश्यक धार्मिक तत्वों का ही निरूपण है अपितु उन सच्चाइयों का भी निर्देश है जिन्हें विज्ञान ने प्रमाणित कर दिया है।'' वेदों के द्रष्टा ऋषियों को रेडियम, इलेक्ट्रान, वायुयान आदि का भी ज्ञान था, इसमें कुछ भी आश्चर्य नहीं है।

महर्षि दयानन्द के समकालीन वैदिक विद्वान् सत्यव्रत सामश्रवी ने वेदों पर भाष्य रचना करने वाले की योग्यता का उल्लेख करते हुए लिखा है - यह स्पष्ट है कि वही मनुष्य वेदों का योग्य भाष्यकार हो सकता है जिसे कृषि शास्त्र, व्यापार, भूगर्भ शास्त्र, ज्योतिष, जल स्थिति विज्ञान, अग्निविद्या, वनस्पति शास्त्र, जीव शास्त्र, शरीरशास्त्र तथा युद्ध विद्या का ज्ञान है।

इस प्रकार वेद से ही सभी सत्य विद्याओं का केन्द्र सिद्ध है। अन्यत्र एक ही जगह ये सभी विद्यायें उपलब्ध होना असम्भव है।

कसौटी - ८ - जिसमें लौकिक कहानियां अथवा इतिहास न हो।

वेदार्थ समीक्षा कर राजवीर शास्त्री के अनुसार नित्य व ईश्वरोक्त वेदों में अनित्य वस्तुओं का वर्णन नहीं हैं। संसार में वेद के सिवाय अन्य पुस्तकों में अनित्य ऐतिहासिक वस्तुओं का वर्णन मिल सकता है पर वेदों में नहीं है।

महर्षि मनु तथा महाभारतकार ने श्लोकों में स्पष्ट कहा है -

सर्वेषां तु स नामानि कर्माणि च पृथक्-पृथक् ।
वेद शब्देभ्य एवादौ पृथक् संस्थाश्च निर्ममे ॥ मनु.
नामरूपेण च भूतानां कर्मणां च प्रवर्तनम् ।
वेदशब्देभ्य एवादौ निर्ममे स महेश्वरः॥

सृष्टि के आदि में सब पदार्थों के नाम और पृथक्-पृथक् कर्म वेदों के शब्दों से ही निर्धारण किये गये। गौ जाति को गौ, आम्र जाति को आम्र तथा ब्राह्मणादि वर्णों के कर्म वेदों से निश्चित किये गये।

परन्तु नामों की साम्यता देखकर यह कह देना कि ये वशिष्ठादि व्यक्ति विशेष हुए हैं अत: वेदों में इतिहास है, यह कदापि ठीक नहीं। जैसे आज-कल राम या लक्ष्मण किसी व्यक्ति का नाम सुनकर वे बाल्मीकि रामायण के राम-लक्ष्मण नहीं हो सकते। ठीक इसी प्रकार वेदों के विषय में भी समझना चाहिये। वेदों में सामान्य बातों का अर्थात् शाश्वत घटनाओं और तत्वों का वर्णन है किसी व्यक्ति अथवा स्थान विशेष का वर्णन नहीं है। अत: वेदों के प्राचीन भाष्य ब्राह्मण, निरुक्त, मीमांसादि वेदों में अनित्य इतिहास नहीं मानते।

कसौटी - ९. एक ईश्वर पर विश्वास करना सिखाये व्यक्ति विशेष पर नहीं।

धार्मिक जगत् में सबसे आवश्यक सबसे महान् और सबसे पवित्र है परमात्मा का विचार। कोई भी समाज धार्मिक नहीं कहलाता जिसकी आध ाारशिला ईश्वर विश्वास पर न हो। परमेश्वर है या नहीं ,यदि है तो कैसा है? कहां है ? एवं कैसे जाना जाता है ? इत्यादि प्रश्न हैं जो पूछे और कहे जाते हैं। वेद उसके सम्बन्ध में जो ऊँची, पवित्र तथा सच्ची शिक्षा देता है उसकी तुलना अन्यत्र नहीं मिलती। वेदों के अनुसार इस सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में एक बड़ी शक्ति वर्तमान है, जो सर्वान्तर्यामी, एक, अद्वितीय, नित्य, शुद्ध, बुद्ध, मुक्त स्वभाव है। उसी से सारे संसार को गति मिलती है,उसी की ज्योति से सूर्य चन्द्र आदि को ज्योति मिलती है। वह सर्वत्र परिपूर्ण है,वह एक है,एक है और निश्चय वह एक ही है।

.......**स एष एक एक वृदेक एव। सर्वे अस्मिन् देवा एकवृतो भवन्ति** ॥ अथर्ववेद १३/४/७ ये सारे दिव्य पदार्थ अथवा देवता उसमें ही है। वही एकमात्र उपासनीय है।

एक एव नमस्यो विक्ष्वीड्यः (अथर्ववेद२/२/१) ऋग्वेद ८/१/१ में उस ईश्वर के सिवाय अन्य किसी की उपासना का निषेध है।

तमेव विदित्वाति मृत्युमेति (यजुर्वेद ३१/१८) उस प्रभु को जानकर ही मनुष्य मृत्यु को पार करता है। अन्य साम्प्रदायिक ग्रन्थों में उनके प्रवर्तकों के महत्व ही अधिकता से लिखे होते हैं जिसमें चेले लोग उलझ जाते हैं।

कसौटी १०- विज्ञान जिसे झूठा न सिद्ध कर सके।

वेदों में सार्वभौमिक सत्य के रूप में विज्ञान समाया हुआ है। वेदों में विज्ञान संकेत के रचयिता बाबूलाल जोशी के अनुसार वेद में कई ऐसे वैज्ञानिक विषयों का समावेश आदिकाल से वर्णित है जिसका प्रत्यक्षीकरण अब हो रहा है और प्रलयकाल के आने तक होता रहेगा।

अन्य मतवादियों के सिद्धान्त आदि विज्ञान की कसौटी पर खरे नहीं उतरे हैं या बदलते रहे हैं, ऐसा इतिहास में कई घटनायें प्रसिद्ध हैं।

इन दसों कसौटियों में कसकर देखने परखने से वेद की यथार्थता सिद्ध होती है। अतएव **न वेदबाह्यो धर्मः** वेद से बाहर धर्म नहीं और **'वेदवादं परित्यज्य न कश्चित्सुखमेधते'**

वेद के मार्ग को छोड़कर कभी कोई सुखी नहीं हो सकता, ऐसा कथन समीचीन प्रतीत होता है। वेदों के त्रैतवाद, वर्णाश्रमवाद, यज्ञवाद, यथार्थवाद, यथायोग्यवाद, ज्ञान-विज्ञानवाद, मातृवाद, मानववाद तथा धर्मवाद आदि महत्वपूर्ण है, इन्हें जानने समझने के लिये भी वेदों का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना परमधर्म है। **वादे-वादे जायते तत्व बोधः** विवाद रहित वादों में निश्चयात्मक ज्ञान होता है। वेदवाणी जीवन के चार सूत्रों को उपस्थित करती है।

१-प्रभु का स्तवन करो-मिलकर चलो। (**अग्निमीळे........संगच्छध्वम्** । ऋग्वेद)

२-अन्नप्राप्ति के लिये प्रयत्न करो-उत्तम मार्ग से अर्जन करो। (**इषे त्वा.........अग्ने नय सुपथा राये** । यजुर्वेद)

३-प्रभु को प्रकाश के लिये हृदय में बिठाइये ....भद्र सुनो कहो। (**अग्न आ याहि.........भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम** । सामवेद)

४-वाचस्पति बनो, कम खाओ, कम बोलो................सोम को

शरीर में सुरक्षित रखो। (**वाचस्पतिर्बला........पिबसोमं ऋतुना** । अथर्ववेद)

जीवन के इन चारों सूत्रों द्वारा वेद हमारे जीवनों को मलिन होने से बचाता है। इसलिये वेद पढ़ें-आगे बढ़ें। वेदों का स्वाध्याय करें। स्वाध्याय शब्द की निरुक्ति से भी यही भाव निकलता है --

सु -अध्याय -स्वाध्याय: । सुकृताय पुण्यप्राप्तयेवेदाध्ययनं स्वाध्याय: अर्थात् पुण्य की प्राप्ति के लिये वेद का पढ़ना स्वाध्याय है, अथवा

सुष्ठु आवृत्य वेदाध्ययनं स्वाध्याय: हर तरह से सांगोपांग वेद को पढ़ना स्वाध्याय है। महर्षि याज्ञवल्क्य ने स्वाध्याय के अनेक लाभों का उल्लेख किया है, जिनमें मुख्य ये हैं :-

१- युक्तमना भवति - स्वाध्यायशील का मन एक विषय में लगते जाता है।

२-अपराधीनो भवति - अपराध में प्रवृत्त नहीं होता अथवा परतन्त्रता से बचता है।

३-अहरहरर्थान् साधयते- रोज-रोज नये अर्थों को प्राप्त करता है।

४-सुखं स्वपीति - सुख पूर्वक सोता है, निद्रा प्रगाढ़ होती है।

५-परमचिकित्सकात्मनो भवति - अपने आप का चिकित्सक हो जाता है।

६-इन्द्रिय संयम: भवति - इन्द्रियों को संयम में रख सकता है।

७-एकारामता भवति - एकत्व को साध लेता है। (सबको साधने सब कुछ चला जाता है।)

८-प्रज्ञावृद्धिर्भवति - विशेष ज्ञानयुक्त बुद्धि की वृद्धि होती है।

कविवर प्रकाश जी के शब्दों में कहें तो --

वेद स्वाध्याय सत्संग करते रहो,
एक दिन प्राप्त सत्ज्ञान हो जायेगा।
शान्ति होगी परम,भ्रान्ति मिट जायेगी,
पाप तापों का अवसान हो जायेगा॥

> सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जान जाते हैं,
> उन सबका आदि मूल परमेश्वर है।
> —दयानन्द सरस्वती

।। ओ३म् ओ३म् करो बेड़ा पार है।।

वानप्रस्था गुलाबी देवी आर्या के जीवनकाल में उनकी प्रेरणा से प्रकाशित साहित्य–

१. विश्वकल्याण निधि	२०५२-१९९५
२. विश्वकल्याण निधि (द्वितीय संस्करण)	२०५७-२०००
३. शतहस्त समाहार सहस्र हस्त संकिर	२०६०-२००४
४. वानप्रस्थ श्री सत्यनारायण आर्य (आर्य जगत् की दिव्य विभूति)	२०६४-२००७
५. विश्व कल्याण दिव्य भजनमाला (२००० पृष्ठ)	२०६५-२००९

आपकी पुण्य स्मृति में वानप्रस्थ सत्यनारायण आर्य द्वारा प्रकाशित साहित्य–

१. गृहोद्यान के दो माली	२०६६-२००९
२. आर्यों के नित्यकर्म	२०६६-२०१०
३. मानवता पर कलंक भ्रूणहत्या	२०६८-२०१०
४. निर्धनों के लिए ४०० फ्लैटों का प्रोजेक्ट	२०६८-२०१०

वानप्रस्था गुलाबी देवी आर्या दिव्य स्मृति ग्रन्थमाला :-

(विभिन्न विषयों पर आर्य जगत् के विद्वानों द्वारा ट्रेक्ट लेखन २०६८-२०११)

१. ईश्वर-जीव-प्रकृति	आचार्य ज्ञानेश्वर आर्य
२. गुलदस्ता	दोमादर लाल मूंधड़ा
३. जीवन का अन्तिम लक्ष्य–मोक्ष	स्वामी ऋतस्पति परिव्राजक
४. ईश्वर और जीव	डॉ. सुदर्शन देव आचार्य
५. प्रकृति	आचार्य दिलीप कुमार जिज्ञासु
६. वेद पढ़ें - आगे बढ़ें	डॉ. कमलनारायण वेदाचार्य
७. स्तुति प्रार्थना व उपासना का यथार्थ स्वरूप	स्वामी अमृतानन्द सरस्वती
८. आधुनिक भारत की सच्ची सन्त	आचार्य सुखदेव 'आर्य तपस्वी'
९. सुख-शान्ति के उपाय	स्वामी शान्तानन्द सरस्वती
१०. वैदिक सूक्त	आचार्य राहुलदेव शास्त्री
११. भागवत् कथा	आचार्य सोमदेव शास्त्री
१२. फूलझड़ियाँ	वानप्रस्थ सत्यनारायण आर्य

आपकी पुण्य स्मृति में प्रकाशित होने वाला साहित्य–

(क) वानप्रस्था गुलाबी देवी आर्या दिव्य स्मृति ग्रन्थमाला में अन्य कई ट्रेक्ट

(ख) भारत की सच्ची सन्त आदर्श नारी वानप्रस्था गुलाबी देवीजी की जीवन-यात्रा